3

मंगलवार

मत्ती 21:18-25:46; मरकुस 11:20-13:37; लूका 20; 21; यूहन्ना 12:20-50

''तब उन्होंने उसे बातों में फंसाने के लिए कई एक फरीसियों और हेरोदियों को उसके पास भेजा'' (मरकुस 12:13)।

पवित्र शास्त्र में लिखित मसीह के जीवन के दिनों में सबसे व्यस्त मंगलवार का दिन ही था। उसने यहूदी अगुओं की जेबों पर हमला कर दिया था। इससे उनका ध्यान खिंचा। यहूदी अगुओं ने मन्दिर को ''डाकुओं की खोह'' बना दिया था।

वे यीशु से नाराज़ होकर पूछने लगे, ''वह कौन है, जिसने तुझे यह अधिकार दिया है?'' ''तू कौन है?'' ''तू अपने आप को क्या समझता है?'' उन्हें लगा कि ऐसी बातें करके वे आसानी से इस गलीली को नगर से भगा देंगे। अगर उत्तर देकर वह कहता, ''परमेश्वर,'' तो वह हार जाता, क्योंकि फिर उन्होंने उस पर पमरेश्वर की निन्दा करने का आरोप लगाना था। यदि वह उत्तर देकर कहता, ''मनुष्य,'' तो भी वह हार जाता, क्योंकि फिर वे कहते कि जो उसने किया था वह करने का उसे कोई अधिकार नहीं, परन्तु यीशु ने यह पूछकर कि ''यूहन्ना को अधिकार कहां से मिला था?'' पासा ही पलट दिया। उसने आग से आग को बुझाया। उन्होंने उसका उत्तर देने से इनकार कर दिया, जिस कारण यीशु ने भी उनके प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया! (देखें मत्ती 21:23-27; मरकुस 11:27-33; लूका 20:1-8.) यहूदी अगुओं ने यीशु से उसका सर्टिफिकेट पूछ कर कि ''तू किस स्कूल में पढ़ा है? तू याजक अर्थात ठहराया हुआ रब्बी, या यरूशलेम की **सेमिनरी** का पढ़ा हुआ तो नहीं है'' उसे नीचा दिखाने की कोशिश की थी। शीघ्र ही उन्हें पता चल गया कि वह ''महान डिबेटर अर्थात वाद-विवाद करने वाला'' है। उसने उनकी मूर्खता को सामने ला दिया।

दृष्टांतों में शिक्षा

इस संदर्भ में यीशु ने तीन दृष्टांत बताए। प्रेरितों ने यीशु से पूछा था कि वह दृष्टांतों में क्यों सिखाता है और उसके कहने का क्या अर्थ था (मत्ती 13:10, 36)। उसने कहा कि इससे केवल उसके अनुयायियों में गिने जाने को उत्सुक लोग पीछे हट जाएंगे। दृष्टांत ''बाल कथाएं'' नहीं हैं। वे आपकी कमियां आप को दिखाते हुए कोमलता से आपकी अगुआई करते हैं।

यह समझाते हुए कि मन फिराव क्या है (मत्ती 21:28-32), यीशु ने पहले दो पुत्रों का दृष्टांत दिया। एक पुत्र ने अपने पिता की आज्ञा नहीं मानी थी, परन्तु बाद में पछता कर उसने आज्ञा

को माना। दूसरे ने, जिसने अपने पिता से कहा था कि वह उसकी बात मानेगा, बाद में नहीं मानी। चुंगी लेने (या टैक्स इकट्ठा करने) वाले तो परमेश्वर की उपस्थिति में जा सकेंगे, परन्तु कुछ ''धार्मिक लोग'' नहीं। चुंगी लेने वालों और वेश्याओं ने यीशु को क्रूस पर नहीं चढ़वाया था। यह काम परमेश्वर के अपने लोगों ने किया था। यरूशलेम परमेश्वर का नगर था। यरूशलेम के अन्दर परमेश्वर का मन्दिर था, परन्तु नगर के थोड़ा बाहर शीघ्र ही यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जाना था। यह बात चौंका देने वाली है कि कर्म-काण्डों को मानने वाले लोग इतने बुरे, अन्धे, घमण्डी और पूर्वधारणा से भरे हो सकते हैं।

फिर यीशु ने यह समझाते हुए कि उसे किस प्रकार ठुकराया जाना था, दुष्ट किसानों का दृष्टांत बताया, जिन्होंने गृहस्वामी के पुत्र को मार डाला था (मत्ती 21:33-44; मरकुस 12:1-12; लूका 20:9-19)। उसने उस पत्थर के बारे में बताया, जो इस्राएलियों को बचा सकता था, परन्तु उन्होंने उसे फैंक दिया। यहूदी अगुओं को मालूम था कि यीशु उनकी और अपनी बात कर रहा था।

यह दिखाते हुए कि किस प्रकार कुछ लोग परमेश्वर के निमन्त्रण को ठुकराएंगे, उसने विवाह के भोज का एक दृष्टांत दिया (मत्ती 22:2-14; लूका 14:16-24)। सगे सम्बन्धियों और मित्रों ने निमन्त्रण ठुकराया ही नहीं, बल्कि इस अवसर का खूनी खेल खेला। राजा, जिसने अपने पुत्र के विवाह का भोज दिया था, क्रोध में आकर कहने लगा, ''इसलिए चौराहों में जाओ और जितने लोग तुम्हें मिलें सब को ब्याह के भोज में बुला लाओ'' (मत्ती 22:9)। जब बुलाए हुओं ने आने से इनकार कर दिया, तो आम लोगों को बुला लिया गया। कोई आश्चर्य नहीं कि आम लोग यीशु की बात आनन्द से सुनते थे (मरकुस 12:37)।

वाद-विवाद आरम्भ होते हैं

जल्द ही फरीसी और हेरोदेसी[1] अपनी बातों में यीशु को उलझाने के लिए इकट्ठे हो गए। फरीसी लोग हेरोदेसियों से घृणा करते थे और मानते थे कि वे गद्दार हैं, परन्तु यीशु से उन्हें इससे भी अधिक घृणा थी। दोनों गुटों ने मिलकर यीशु के सामने चतुराई भरा एक प्रश्न रखा कि ''कैसर को कर देना उचित है या नहीं?'' सिक्का हाथ में लेते हुए उसने कहा, ''जो कैसर का है, वह कैसर को; और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो'' (मत्ती 22:21)। इससे उनकी बोलती ही बन्द हो गई।

जब सदूकी[2] उसके पास आए, तो उन्होंने भी मूर्खता ही दिखाई। यीशु ने उन्हें टका सा जवाब दिया। उसने कहा, ''तुम पवित्र शास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ नहीं जानते'' (मत्ती 22:29; मरकुस 12:24)।

ढीठ फरीसी एक वकील को लेकर फिर आ गए, जिसका सवाल था कि ''व्यवस्था में सबसे बड़ी आज्ञा क्या है?'' यीशु ने उत्तर दिया कि ''प्रभु परमेश्वर को प्राथमिकता देना'' और फिर दूसरी बड़ी आज्ञा कि ''अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।'' उसके उत्तर ने उस वकील को लाजवाब कर दिया। (देखें मत्ती 22:34-40; मरकुस 12:28-34.)

फिर यीशु ने उनसे पूछा कि वास्तव में मसीहा कौन है? उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। यहां पर वाद-विवाद खत्म हो गया। (देखें मत्ती 22:41-46; मरकुस 12:35-37; लूका 20:41-44.)

सीधा उपदेश

इस सब के बाद, यीशु ने वचन में सबसे अधिक चोट पहुंचाने वाला उपदेश दिया (मत्ती 23)। उसने यहूदी अगुओं को ''सांप'' और ''अन्धे अगुवे'' कहा। उन्हें ''कपटी'' का नाम देते हुए उसने सात हाय बोलीं। ''हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! ... कितनी ही बार मैंने चाहा कि ... तेरे बालकों को इकट्ठा कर लूं, परन्तु तुम ने न चाहा'' (मत्ती 23:37; देखें लूका 13:34)।

भविष्यवाणी और प्रचार

मन्दिर से निकलकर बाहर आते हुए यीशु के चेलों ने मन्दिर के गिरने के बारे में तीन प्रश्न पूछे: ''ये बातें कब होंगी?''; ''तेरे आने का चिह्न क्या होगा?''; और ''जगत का अन्त कब होगा?'' मत्ती 24, मरकुस 13, और लूका 21 में यीशु ने तीनों प्रश्नों का उत्तर दिया। अन्य शब्दों में, वह अभी भी सिखा रहा था।

यहां हम ''दो दमड़ियों वाली विधवा'' के बारे में पढ़ते हैं, जिसने जो कुछ उसके पास था, सब परमेश्वर को दे दिया (मरकुस 12:41-44; लूका 21:1-4)। हर प्रकार के कपट के बीच परमेश्वर ने हर युग के सब लोगों को याद दिलाने के लिए कि सच्चा दान क्या है, इस दीन विधवा को भेजा!

मुश्किल आगे थी! भीड़ और आलोचकों के बावजूद यीशु ने अपने चेलों को ज़िम्मेदारी पर ज़ोर देते हुए, तोड़ों का दृष्टांत, न्याय की तस्वीर दिखाते हुए भेड़ और बकरियों का दृष्टांत (मत्ती 25) देकर तीन महत्वपूर्ण सच्चाइयां बताईं। परमेश्वर के किसी सेवक ने कभी ऐसे वचन नहीं सुनाया जैसे यीशु ने उस दिन सुनाया था, परन्तु उसका प्रचार बहरे कानों के ऊपर से रेंग गया।

कितना अद्‌भुत दिन था!

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!

टिप्पणियां

[1]शायद यीशु के समय के सबसे अधिक प्रभावशाली यहूदी धार्मिक अगुवे, फरीसियों को स्वधर्मी और हठीले माना जाता था। हेरोदेसी लोग पलिश्तीन में हेरोदेस के परिवार की शक्ति बढ़ाने को समर्पित एक राजनैतिक दल था। [2]सदूकी लोग धनवान कुलीन लोग थे, जिनमें से अधिकतर याजक थे। वे यीशु से घृणा करते थे क्योंकि उसने उनके अधिकार को चुनौती दी थी।